بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 06

राह-ए-ईमान

जून
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 14.4.2023).....8
8. ख़िलाफ़त : एक सुरक्षित क़िला.....12
9. अरबईन नम्बर-2.....22
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

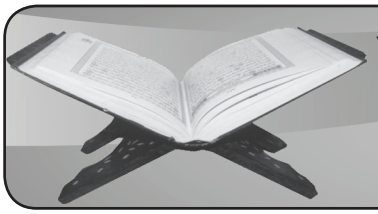

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾

अनुवादः- 65. (बताओ तो) वह जो पहली बार पैदा करता है और फिर इस (सृष्टि के क्रम) को दुहराता रहता है तथा तुम्हें बादलों और भूमि से जीविका प्रदान करता है। क्या (सर्वशक्तिमान) अल्लाह के सिवा कोई और भी उपास्य है? तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो (कि उस जैसा दूसरा उपास्य भी है)।
66. तू कह दे कि आसमानों तथा ज़मीन में जो भी मख़्लूक़ है उन में से किसी को भी अल्लाह के सिवा परोक्ष का ज्ञान नहीं है और उन में से कोई यह भी नहीं जानता कि उन को कब जीवित कर के उठाया जाएगा।
(सूरह नमल - 65-66)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवादः हज़रत जाबिर बिन असवद या असवद बन जाबिर बताते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में दो आदमी यह समझते हुए कि मस्जिद में नमाज़ जमाअत के साथ हो चुकी होगी घर में नमाज़ पढ़ी और फिर मस्जिद में आए और देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ा रहे हैं वे नमाज़ में शामिल होने के बजाय एक तरफ होकर बैठ गए कि एक बार तो वह नमाज़ पढ़ चुके हैं फिर दोबारा वही नमाज़ पढ़ना सही नहीं। जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सलाम फेरने के बाद उन्हें देखा कि वह नमाज़ में शामिल नहीं हुए हैं तो वे दोनों डर के मारे कांपते हुए आए कि शायद उनसे कोई गुनाह हो गया है। हुज़ूर ने उनसे नमाज़ न पढ़ने की वजह पूछी। उन्होंने जब घटना बताई तो आपने फरमाया- अगर अकेले नमाज़ पढ़ चुके हो तो फिर भी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ लिया करो चाहे तुम पहले अदा की गई नमाज़ को ही फर्ज़ समझते हो।

(मसनद अल् इमामल् आज़म किताबुस्सलात पृष्ठ 82)

हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे मकान में ज़ुहर से पहले चार रकआत नमाज़ पढ़ते फिर लोगों को नमाज़ पढ़ाने मस्जिद चले जाते। फिर वापस आकर दो रकआत पढ़ते और इसी तरह जब आप मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ाकर घर तशरीफ लाते तो दो-दो रकआत नमाज़ पढ़ते। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

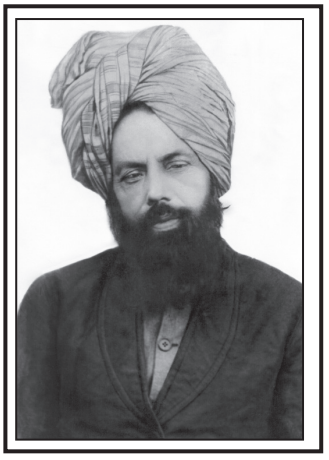

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

ख़ुदा तआला सदैव सच्चों ही की सहायता और मदद करता है

फ़रमाया कभी कोई झूठ इतना अधिक चल नहीं सकता अंतत: दुनिया में हम देखते हैं कि बुराई करने वाले झूठे और फ़रेबी अपने झूठ में थक कर हार जाते हैं। फिर क्या कोई ऐसा झूठा हो सकता है जो निरंतर 25 वर्ष से ख़ुदा पर झूठ बोल रहा हो और न थका हो और ख़ुदा को भी उसके लिए लज्जा न आए अपितु उसकी सहायता में निशान प्रदर्शित करता रहे। यह विचित्र बात है ऐसा कदापि नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला हमेशा सच्चों ही की सहायता और मदद करता है।

देखो यह जो भविष्यवाणी है कि मेरी आयु 80 वर्ष के निकट होगी क्या कोई झूठा इस प्रकार की भविष्यवाणी कर सकता है? और विशेष रूप से इस पर 30 वर्ष गुज़र भी गए हों और ऐसा ही उस समय जब कोई न जानता था और न यहां आता था यह कहा يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ और يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ क्या यह झूठा कर सकता है कि ऐसा कहे और फिर ख़ुदा भी ऐसे झूठे की परवाह न करे अब तो उसकी भविष्यवाणी पूरी करने को दूर-दराज़ से लोग भी उसके पास आते रहे और प्रत्येक प्रकार के उपहार और राशि भी आने लगी। यदि यह बात हो कि झूठे के साथ भी ऐसे मामले होते हैं तो फिर नबूवत से ही ईमान उठ जाए। यही निशान हैं जो हमारी जमाअत के प्रेम और शिष्टाचार में उन्नति का कारण हो रहे हैं। झूठे और सच्चे को तो उसके मुंह से ही देख कर पहचान सकते हैं।

फ़रमाया : सच्चाई का यह एक निशान भी है कि सच्चे का प्रेम सद्प्रवृति वाले लोगों के दिलों में डाल देता है। मूर्ख को यह मार्ग नहीं मिलता कि नूर का भाग ले। वह प्रत्येक बात में कुधारणा ही से काम लेता है।

फ़रमाया : हमको दिखावे और तकल्लुफ़ की आवश्यकता नहीं चाहे कोई हमारे पहनावे से प्रसन्न हो या अप्रसन्न। हमारा कोई अपना कार्य नहीं है। ख़ुदा का अपना कार्य है और वह स्वयं कर रहा है।

अपनी सच्चाई पर विश्वास :-

फ़रमाया : अल्लाह तआला हम को लज्जित होने की अवस्था में न छोड़ेगा वह सब पर समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण कर देगा। याद रखो आकाशीय और ज़मीनी व्यक्तियों में अंतर होता है। जो ख़ुदा की ओर से आते हैं वह स्वयं उनके सम्मान को प्रदर्शित करता है और उनकी सच्चाई को रोशन करके दिखाता है और जो उसकी ओर से नहीं आते और झूठे होते हैं वह अंतत: अपमानित हो कर नष्ट हो जाते हैं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर

जिन विचारों को ईसाई साहिब ने अपनी इबारत में आरोप के रूप में प्रस्तुत किया है वह वास्तव में आरोप नहीं है अपितु वह तीन बोधभ्रम हैं जो विचार की कमी के कारण उनके हृदय में पैदा हो गए हैं। नीचे हम उन बोधभ्रमों का निवारण करते हैं।

पहले बोधभ्रम के बारे में उत्तर यह है कि सच्चे नबी की यह निशानी कदापि नहीं है कि ख़ुदा तआला की तरह हर एक गुप्त बात का स्थायी तौर पर उसको ज्ञान भी हो अपितु अपनई व्यक्तिगत शक्ति और अपनी व्यक्तिगत विशेषता से अन्तर्यामी होना ख़ुदा तआला की ही विशेषता है। हमेशा से सत्यनिष्ठ लोग अल्लाह तआला के परोक्ष के ज्ञान के बारे में 'ख़ुदा की ही व्यक्तिगत विशेषता' की आस्था रखते आए हैं और दूसरे समस्त सम्भावित अस्तित्वों के बारे में व्यक्तिगत तौर पर निषेध और अल्लाह तआला के बारे में अनिवार्य होने की आस्था रखते हैं अर्थात् यह आस्था कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व के लिए अन्तर्यामी होना अनिवार्य है और उसकी सही पहचान की यह व्यक्तिगत विशेषता है कि अन्तर्यामी हो परन्तु सम्भावित अस्तित्वों के लिए कि जो नश्वर और मिथ्या हैं इस विशेषता में तथा ऐसा ही दूसरी विशेषताओं में अल्लाह तआला के साथ भागीदारी जाइज़ नहीं और जैसा अस्तित्व की दृष्टि से ख़ुदा तआला की भागीदारी निषेध है ऐसा ही विशेषताओं की दृष्टि से भी निषेध है। अत: सम्भावित अस्तित्वों को देखते हुए उनका अन्तर्यामी होना निषेध है, चाहे नबी हों या मुहद्दिस हों, या वली हों, हाँ ख़ुदा तआला के इल्हाम से परोक्ष के रहस्यों को मालूम करना यह ऐसा है कि हमेशा से विशेष तथा चयनित पुरुषों को इससे हिस्सा मिलता रहा है और अब भी मिलता है जिसको हम केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में पाते हैं न कि किसी और में। ख़ुदा की आदत इसी प्रकार से जारी है कि वह कभी-कभी अपने विशेष बन्दों को अपने कुछ विशेष रहस्यों पर सूचित कर देता है और निर्धारित और निश्चित समयों में परोक्ष के ज्ञान उन पर उतरते हैं अपितु अल्लाह के पूर्ण सानिध्य प्राप्त लोग इसी से आज़माए और पहचाने जाते हैं कि कभी भविष्य की गुप्त बातें या कुछ गुप्त रहस्य उन्हें बताये जाते हैं परन्तु यह नहीं कि उनके अधिकार, इरादे और शक्ति से अपितु ख़ुदा तआला के इरादे, अधिकार और शक्ति से ये नेमतें उन्हें मिलती हैं।

वे जो उसकी इच्छा अनुसार चलते हैं और उसी के हो जाते हैं और उसी में खो जाते हैं तो उनके साथ उस साक्षात वरदान स्वरूप (ख़ुदा) का कुछ ऐसा बर्ताव है कि अधिकतर उनकी सुनता और अपना पिछला कार्य या भावी इच्छा कभी उन पर प्रकट कर देता है। परन्तु ख़ुदा के बताने के बिना कुछ भी मालूम नहीं होता वे यद्यपि ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त तो होते हैं परन्तु ख़ुदा तो नहीं होते, समझाने से समझते हैं, बताने से जानते हैं, दिखाने से देखते हैं, बुलवाने से बोलते हैं और अपने अस्तित्व में कुछ भी नहीं होते। जब महान शक्ति उन्हें अपने

इल्हाम की प्रेरणा से बुलाती है तो वे बोलते हैं और जब दिखाती है तो देखते हैं और जब सुनाती है तो सुनते हैं तथा जब तक ख़ुदा तआला उन पर कोई गुप्त बात प्रकट नहीं करता तब तक उन्हें इस बात की कुछ भी ख़बर नहीं होती। समस्त नबियों की जीवनियों (Life) में इसकी गवाही पाई जाती है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की ओर ही देखो कि वह क्योंकर अपनी अज्ञानता का स्वयं इक़रार करके कहते हैं कि उस दिन और उस घड़ी के बारे में बाप के अतिरिक्त न तो फ़रिश्ते जो आसमान पर हैं, न बेटा, कोई नहीं जानता। मरक़स अध्याय 13 वचन 32 और फिर वह कहते हैं कि मैं स्वयं से कुछ नहीं करता (अर्थात् कुछ नहीं कर सकता) परन्तु जो मेरे बाप ने सिखाया वे बातें कहता हूँ। किसी को ईमानदारों की श्रेणी तक पहुँचाना मेरे अधिकार में नहीं। मुझे क्यों नेक कहता है नेक कोई नहीं सिवाए एक के अर्थात् ख़ुदा। (मरक़स अध्याय 10 वचन 18)

अत: किसी नबी ने सत्ता सम्पन्न या अन्तर्यामी होने का दावा नहीं किया। देखो उस विनीत बन्दे की ओर जिसको मसीह करके पुकारा जाता है और जिसे नादान सृष्टि के पुजारियों ने ख़ुदा समझ रखा है कि कैसे उस ने प्रत्येक स्थान में अपने कथन और कर्म से प्रकट कर दिया कि मैं एक कमज़ोर और अशक्त बन्दा हूँ और मुझ में व्यक्तिगत तौर पर कोई भी ख़ूबी नहीं और अन्तिम इक़रार जिस पर उनका अन्त हुआ कैसा प्यारे शब्दों में है। अत: इन्जील में यों लिखा है कि वह अर्थात् मसीह (अपनी गिरफ्तारी की सूचना पा कर) घबराने और दुखी होने लगा तथा उन से (अर्थात् अपने हवारियों से) कहा कि मेरी जान का ग़म मौत का सा है और वह थोड़ा आगे जाकर ज़मीन पर गिर पड़ा (अर्थात् सज्दा किया) और दुआ मांगी कि अगर हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए और कहा कि हे अब्बा! हे बाप! सब कुछ तुझ से हो सकता है। इस प्याले को मुझ से टाल दे। अर्थात् तू सर्वशक्तिमान है और मैं कमज़ोर और असहाय बन्दा हूँ। तेरे टालने से यह मुसीबत टल सकती है और अन्ततः 'ईली-ईली लिमा सबकतनी' कहकर जान दी। जिसका अनुवाद यह है कि "हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा!! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।"

अब देखिये कि यद्यपि दुआ तो स्वीकार न हुई क्योंकि अटल प्रारब्ध (तक़्दीर मुबरम) था। एक लाचार सृष्टि की स्रष्टा के अटल इरादे के आगे क्या चल सकती थी। परन्तु हज़रत मसीह ने अपनी विनय और बन्दगी के इक़रार को चरम तक पहुंचा दिया, इस आशा के साथ कि शायद स्वीकार हो जाए। यदि उन्हें पहले से ज्ञान होता कि दुआ अस्वीकार की जाएगी कदापि स्वीकार नहीं होगी तो वह पूरी रात निरंतर फ़ज्र तक अपने बचाव के लिए क्यों दुआ करते रहते और क्यों स्वयं को तथा अपने हवारियों को भी पाबंदी से इस निरर्थक परिश्रम में डालते।

अत: ऐतराज़ करने वाले के कथनानुसार उनके दिल में यही था कि अंजाम ख़ुदा को मालूम है मुझे मालूम नहीं। फिर ऐसा ही हज़रत मसीह की कुछ भविष्यवाणियों का सही न निकलना वास्तव में इसी कारण था कि गुप्त रहस्यों से अज्ञानता के कारण विवेचना के तौर पर व्याख्या करने में उनसे ग़लती हो जाती थी जैसा कि आप ने फ़रमाया था कि जब नए रूप में इब्ने आदम अपने प्रताप के तख्त पर बैठेगा तुम भी (हे मेरे बारह हवारियो) बारह तख्तों पर बैठोगे। (देखो मती 20:28) (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 40-43)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय ऊर्जा की बचत आज हम सबकी ज़िम्मेदारी है

प्रिय पाठको ! अब गर्मियों का मौसम आ गया है और हमारे देश के एक बड़े हिस्से में गर्मी अत्यधिक होने के कारण बिजली की खपत बहुत होती है ऐसे में ऊर्जा को बचाना और आवश्यकता अनुसार ही उसका उपयोग करना हम सबका दायित्व है। विशेषज्ञों की मानें तो आने वाले समय में ऊर्जा संकट हमारे लिए एक बड़ी समस्या बन जाएगा। बचत का कुरआन ने हमें बताया है وَّكُلُواْ وَاشْرَبُواْ وَلاَ تُسْرِفُواْ إِنَّهُ لاَ يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ (अर्थात खाओ और पियो और हद से ज्यादा ख़र्च मत करो, बेशक वह (अल्लाह) उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो फज़ूलखर्ची करते हैं। यह बात जीवन के हर क्षेत्र में हमें याद रखनी चाहिए।

ऊर्जा संरक्षण के उपाय: हमेशा ISI प्रमाणित सामान का ही उपयोग करें। इलेक्ट्रोनिक सामान खरीदते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह उच्च गुणवत्ता के साथ-साथ कम बिजली की खपत करे और केवल अधिकतम स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदने चाहिए।

हमेशा प्रकाश व्यवस्था के लिए एलईडी बल्ब और एलईडी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करना चाहिए। ज़रूरत पूरी होने पर इलेक्ट्रानिक उपकरणों को तुरंत बंद करें क्योंकि अधिकतर देखा जाता है कि लोग पंखा बल्ब चलता ही छोड़ देते हैं। यह सिर्फ घर की नही अपितु सरकारी कार्यालय, स्कूल, महाविद्यालय, संस्थाएं, दुकान हर जगह जागरूकता आनी चाहिए।

अधिक विद्युत खपत वाले उपकरणों का उपयोग शाम 6-9 बजे के बीच टालना चाहिए क्योंकि इस समय बिजली की मांग उच्चतम होती है।

घर की दीवारों पर हमेशा हल्के रंग का पेन्ट करना चाहिए क्योंकि यह कम रोशनी वाले बल्ब मे भी अधिक उजली लगती है।

देखा जा रहा है कि नि**जी वाहनों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है** जिससे ईंधन की खपत में काफी वृद्धि हुई है अर्थात प्रदूषण, स्वास्थ्य समस्याएं, सड़क जाम, तापमान और मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई है इसलिए एक जगह पर जाना हो तो वाहन शेयरिंग करना चाहिए व सरकारी परिवहन का उपयोग करना चाहिए। अगर आस-पास जाना हो तो पैदल चलें या साइकल चलाना चाहिए। साइकल तो प्रत्येक स्वस्थ मनुष्य को चालानी चाहिए। संभव हो तो कुछ दुरी के लिए ही सही, पर रोज़ चलानी ही चाहिए।

हमारी यह सोच नही होनी चाहिए की हम ज्यादा पैसा कमाते हैं तो ज्यादा खर्च कर सकते हैं तो हम क्यू ईंधन या बिजली बचत करे? यह बचत हमारे देश, पर्यावरण, आने वाली अगली पीढ़ी व समाज के विकास के लिए ज़रूरी है। बहुत बार सड़को पर दिन में बिजली की स्ट्रीट लाइट्स जली रहती हैं। हमेशा पानी के टैंक को भरने के लिए टाइमर लगाना चाहिए ताकी टंकी भरने के बाद अलार्म बज जाएगा और पानी बर्बाद न हो।

तो कहने का अर्थ है कि हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि कभी भी फज़ूल खर्ची न करें जितनी ज़रूरत है उतना उपयोग करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

बदज़नी (कुधारणा) से बचो

अगर दिल में तुम्हारे शर[1] नहीं है
तो फिर क्यों ज़न्ने बद[2] से डर नहीं है
कोई जो ज़ने बद रखता है आदत
बदी से ख़ुद वह रखता है इरादत[3]
गुमाने बद शयातीं[4] का है पेशा
न अहले इफ़्फ़तो[5] दीं का है पेशा
तुम्हारे दिल में शैतां दे है बच्चे
इसी से हैं तुम्हारे काम कच्चे
वही करता है ज़ने बद बिला रैब[6]
के जो रखता है पर्दा में वही ऐब[7]
वो फ़ासिक़[8] है कि जिसने राह गँवाया
नज़र-बाज़ी[9] को इक पेशा बनाया
मगर आशिक़ को हरगिज़ बद न कहियो!
वहाँ बद ज़न्नियों[10] से बच के रहियो
अगर उश्शाक़[11] का हो पाक दामन
यक़ीं समझो कि है तिरयाक़[12] दामन
मगर मुश्किल यही है दरमियाँ में
कि गुल-ए-बेख़ार[13] कम हैं बूस्ताँ[14] में
तुम्हें ये भी सुनाओ इस बयाँ[15] में
के आशिक़ किस को कहते हैं जहाँ[16] में
वो आशिक़ है के जिसको हस्बे तक़दीर
महब्बत की कमाँ[17] से आ लगा तीर
न शहवत[18] है न है कुछ नफ़्स का जोश
हुआ उल्फ़त के पैमानों से मदहोश
लगी सीना में उस के आग ग़म की
नहीं उस को ख़बर कुछ पेच -व- ख़म[19] की

(उद्धरण पांडुलिपि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

---

1. बुराई। 2. बुरा विचार। 3. प्यार। 4. शैतान 5. पवित्र लोग। 6. नि:सन्देह। 7. दोष। 8. दुराचारी। 9. इश्क़ बाज़ी, ताँक-झाँक। 10. बुरे विचार। 11. आशिक़ों। 12. ज़हर की दवा। 13. फूल। 14. बाग़। 15. वर्णन। 16. संसार। 17.कमान। 18. काम वासना। 19. चक्कर।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 5.5.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में

न्याय, उपकार एवं निकट सम्बंधियों को सहायता देने की विवेक पूर्ण व्याख्या।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इसका अनुवाद बयान फ़रमाया- कि अल्लाह नि:सन्देह न्याय का, तथा उपकार का, एवं गैर रिश्तेदारों को भी निकट सम्बंधियों के समान जानने और इसी तरह सहायता करने का आदेश देता है तथा हर प्रकार की अशलीलता तथा अनर्थ की बातों एवं विद्रोह से रोकता है, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम समझ जाओ।

फ़रमाया- यह आयत हर एक जुम्अ: तथा ईदों के दूसरे ख़ुत्ब: में पढ़ी जाती है। इस पवित्र आयत में कुछ नेकियाँ करने तथा कुछ बुराईयों से बचने का वर्णन किया गया है, वास्तविक मोमिन की निशानी यह है कि वह अल्लाह तआला के आदेश एवं निर्देशों के अनुसार कर्म करे। इस आयत में जिन शुभ कर्मों का वर्णन किया गया है, अर्थात न्याय, उपकार एवं निकट सम्बंधियों को सहायता देना, इनके संदर्भ में आज मैं हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथन प्रस्तुत करूँगा। समस्त निर्देश प्रत्यक्षत: एक ही धुरी पर घूम रहे हैं फिर भी आप अलैहिस्सलाम ने विभिन्न रंग में उपदेश दिए हैं।

ये कथन हमें हमारे जीवन अल्लाह तआला के आदेशानुसार व्यतीत करने की ओर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। यदि हम इन निर्देशों पर विचार करें तथा इनके अनुसार अपने जीवनों को ढालने का प्रयास करें तो निश्चय ही हम अल्लाह तआला से भी अपना सम्बंध मज़बूत कर सकते हैं तथा आपस में भी एक दूसरे के अधिकारों की अदायगी अति सुन्दर रंग में कर सकते हैं।

अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़ की अदायगी ही वह रास्ता है जो समाज तथा विश्व स्तरीय

शांति की गारंटी देता है किन्तु खेद है कि दुनिया इस ओर ध्यान नहीं दे रही तथा चाहे मुस्लिम देश हों अथवा शेष दुनिया, सब एक दूसरे के अधिकारों का हनन करने में व्यस्त हैं। ऐसे में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का कर्तव्य है कि वे अपना भी सुधार करें तथा दुनिया को भी इसकी ओर ध्यान दिलाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा का तुम्हें यह आदेश है कि तुम उसके साथ तथा उसके प्राणियों के साथ न्याय का मामला करो, अर्थात अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़ अदा करो तथा यदि इससे बढ़ कर हो सके तो न केवल न्याय बल्कि एहसान करो, अर्थात फ़ज़्र से अधिक तथा ऐसे शुद्ध होकर अल्लाह तआला की बन्दगी करो कि मानो तुम उसको देखते हो। अधिकारों से बढ़ कर लोगों के साथ सद्व्यवहार करो तथा यदि इससे बढ़ कर हो सके तो ऐसे अकारण एवं नि:स्वार्थ होकर ख़ुदा की उपासना तथा अल्लाह के बन्दों की सेवा करो कि जैसे कोई निकटता के जोश से करता है।

फिर इस आयत की रोशनी में ख़ुदा तआला के हक़ को और अधिक स्पष्ट करके बयान करते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं- जैसा कि वास्तव में ख़ुदा के अतिरिक्त कोई उपासना का अधिकारी नहीं है, कोई भी स्नेह के योग्य नहीं है, कोई भी निर्भरता के योग्य नहीं है, क्यूँकि रचीयता होने तथा अनन्त होने एवं पालनहार होने के कारण यह अधिकार केवल उसी का है। यदि तुमने इतना कर लिया करो तो यह न्याय है जिसका ध्यान रखना तुम पर फ़र्ज़ है। फिर यदि इससे अधिक उन्नति करना चाहो तो उपकार का स्तर है, तथा वह यह है कि तुम उसकी महानता को ऐसा स्वीकार करो तथा उसके आगे अपनी उपासना में ऐसे शिष्टाचार वाले (भक्त) बन जाओ तथा उसकी मुहब्बत में ऐसे खोए जाओ कि मानो तुमने उसकी महानता एवं प्रकोप तथा अपतनकारी सुन्दरता को देख लिया है। तत्पश्चात निकट सम्बंधियों को अनुदान देने का स्तर है, तथा वह यह है कि तुम्हारी उपासना तथा तुम्हारी मुहब्बत और तुम्हारे आज्ञा पालन से पूर्णत: मिलावट एवं निष्छलता दूर हो जाए तथा तुम ऐसे जिगरी सम्बंध से उसे याद करो जैसे उदाहरणत: तुम अपने बापों को याद करते हो तथा तुम्हारी मुहब्बत उससे ऐसी हो जाए कि जैसे उदाहरणत: बच्चा अपनी प्यारी माँ से मुहब्बत रखता है।

फिर प्राणियों के अधिकारों के विषय में इस आयत का अर्थ बयान करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- अपने भाईयों तथा मानव जाति से न्याय करो तथा अपने अधिकारों से अधिक उनके साथ कोई बदले की भावना न करो और न्याय पर क़ायम रहो। यदि इस स्तर की उन्नति करना चाहो तो इससे आगे एहसान का स्तर है, और वह यह है कि तू अपने भाई की बदी के मुक़ाबले पर नेकी करे, उसके अत्याचार के बदले में तुम उसको सहायता दो तथा सद्व्यवहार एवं उपकार के रूप में उसका सहयोग करो। फिर इसके बाद निकट सम्बंधियों को अनुदान देने का स्तर है, और वह यह है कि तू जितना अपने भाई से नेकी करे अथवा जितना मानव जाति के साथ सद्व्यवहार करे, उससे कोई एवं किसी प्रकार का बदला स्वीकार न हो बल्कि प्राकृतिक रूप से नि:स्वार्थ होकर वह तेरे द्वारा अमल में आए, जैसे निकटता के जोश से एक भाई दूसरे भाई के साथ भलाई करता है।

अत: यह नैतिक प्रगति का अन्तिम स्तर है कि प्राणियों की सहानुभूति में कोई स्वार्थ अथवा बदला अथवा कोई लाभ पाने की आशा बीच में न हो बल्कि भाईचारे एवं मानव स्नेह का जोश उच्च स्तर पर उन्नति कर जाए कि स्वयं बिना किसी कष्ट के एवं बिना किसी स्वार्थ अथवा आभार के अथवा दुआ या किसी अन्य प्रकार के बदले की भावना के वह नेकी केवल मानवीय जोश से प्रकट हो। फिर एक अवसर पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि इस पवित्र आयत में अल्लाह तआला ने मानव प्रकृति के तीनों स्तर बयान कर दिए और तीसरे स्तर को व्यक्तिगत प्रेम का स्तर कहा है तथा यह वह स्तर है जिसमें समस्त स्वार्थ भस्म हो जाते हैं तथा दिल ऐसे स्नेह से भर जाता है जैसे शीशा इत्र से भरा हुआ होता है। इसी स्तर की ओर संकेत इस आयत में है कि मोमिन लोगों में से कुछ वे भी हैं कि अपने प्राण अल्लाह की प्रसन्नता के बदले बेच देते हैं तथा ख़ुदा ऐसों पर ही मेहरबान है।

फ़रमाया- ख़ुदा तुमसे क्या चाहता है, बस यही कि तुम मानव जाति के साथ न्याय किया करो, फिर इससे बढ़कर यह है कि उनसे भी नेकी करो जिन्होंने तुमसे कोई नेकी नहीं की, फिर इससे बढ़कर यह है कि तुम ख़ुदा के बन्दों से ऐसी सहानुभूति के साथ पेश आओ कि मानो तुम उनके वास्तविक रिशतेदार हो, जैसा कि माएँ अपने बच्चों के साथ व्यवहार करती हैं। क्यूँकि उपकार करने वाला कभी अपने उपकार को जतला भी देता है परन्तु वह जो माँ की भांति प्रकृतिक जोश से नेकी करता है, वह कभी अहंकारी प्रदर्शन नहीं कर सकता। अतएव अन्तिम स्तर नेकियों का वह मानवीय जोश है जो माँ की तरह हो।
यह आयत न केवल प्राणियों से सम्बंधित है बल्कि ख़ुदा से भी सम्बंधित है। ख़ुदा से न्याय यह है कि उसकी अनुकम्पाओं को याद करके उसका आज्ञा पालन करना तथा ख़ुदा से उपकार यह है कि उसकी ज़ात पर ऐसा विश्वास कर लेना कि मानो उसको देख रहा है, तथा ख़ुदा से निकट सम्बंधियों को सहायता देना यह है कि उसकी उपासना न तो स्वर्ग के लालच से हो तथा न नर्क के भय से, बल्कि यदि मान लिया जाए कि न जन्नत है और न जहन्नम है तब भी जोशे मुहब्बत एवं आज्ञा पालन में अन्तर न आवे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अन्य धर्म वालों को इस्लाम की शिक्षा बताते हुए यह विषय कुछ स्थानों पर बयान फ़रमाया है। इसी तरह अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए भी उसे व्याख्या के साथ समझाया है। एक अवसर पर आप अलै. ने फ़रमाया कि न्याय की स्थिति यह है कि जो मुत्तक़ी की अवस्था तामसिक मनोवृत्ति के रूप में होती है उस अवस्था के सुधार के लिए न्याय का आदेश है, इसमें चेतना का विरोध करना पड़ता है। उदाहरणत: किसी का ऋण अदा करना, चेतना इसमें यही चाहती है कि किसी तरह से इसे दबा लूँ। फ़रमाया- मुझे कहते हुए बड़ा खेद है कि कुछ लोग इन बातों की चिंता नहीं करते तथा हमारी जमाअत में भी ऐसे लोग हैं जो अपने ऋणों को अदा करने में बहुत कम घ्यान देते हैं, यह न्याय के विरुद्ध है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो ऐसे लोगों की नमाज़ न पढ़ते थे। अत: तुममें से हर एक इस बात को खूब याद रखे कि कर्ज़ों के अदा करने में सुस्ती नहीं करनी चाहिए तथा हर प्रकार के धोखे और बेईमानी से दूर भागना चाहिए क्यूँकि यह अल्लाह के आदेश के विरुद्ध है।

फ़रमाया- ख़ुदा तआला ने इन सारी भलाई पहुंचाने की रीतियों को स्थान एवं अवसर के साथ

जोड़ दिया है और पवित्र आयत में साफ फ़रमा दिया कि यदि ये नेकियाँ अपने अपने अवसर एवं उचित स्थान पर प्रकट न होंगी तो फिर ये बुराईयाँ बन जाएँगी, न्याय अशलील बन जाएगा अर्थात सीमा को इतना लांघना कि अपवित्र अवस्था हो जाए और ऐसा ही उपकार के इंकार का रूप निकल आएगा अर्थात वह रूप जिससे बुद्धि एवं चैतन्य इंकार करता है और निकट सम्बंधी को अनुदान देने के बजाए विद्रोह बन जाएगा अर्थात वह अकारण सहानुभूति का जोश एक बुरी अवस्था पैदा करेगा। वास्तव में बगी उस वर्ष को कहते हैं जो सीमा से अधिक बरस जाए तथा खेतों को नष्ट कर दे, तथा उचित अधिकार में कमी करने को बगी कहते हैं अथवा उचित अधिकार को बढ़ाना भी बगी है। अर्थात इन तीनों में अवसर एवं अवस्था की शर्त लगा दी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों तथा गोष्ठियों में इसके संदर्भ में अत्यधिक सचेत किया है। अतएव हमारा कर्तव्य है कि अल्लाह तआला से सम्बंध का उच्च स्तर प्राप्त करने तथा बन्दों को उनके अधिकार देने के लिए इनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें। अल्लाह तआला हमें इनके अनुसार जीवन व्यतीत करने, उपासना के उच्चतम स्तर प्राप्त करने, बन्दों के अधिकार, विशेषत: आपस में प्यार मुहब्बत के सम्बंधों को इस प्रकार स्थापित करने का सामर्थ्य प्रदान करे कि हम दुनिया के लिए उदाहरण बन जाएँ, इन बातों पर अमल करते हुए हम बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। हर जुम्अ: हमें इन बातों को सुनकर इन पर अमल करने वाला बनाए अन्यथा हममें तथा ग़ैरों में कोई अन्तर नहीं रहेगा। अल्लाह तआला हममें तथा ग़ैर में एक स्पष्ट अन्तर दिखा दे जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े दर्द से इसको अभिव्यक्त किया है।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान के हालात के लिए भी दुआ करते रहें, हमने तो नेकियाँ फैलाने के लिए अपना काम करते चले जाना है तथा शैतानी प्रकृति के लोगों ने अपने अत्याचार, जो इनका काम है, वे दिखाते रहना है। हमारा तो इन शैतानों से शैतानी की अवस्था में कोई मुक़ाबला नहीं, हमें तो यही है कि अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने वाले हों। सदैव यह दुआ भी करें कि अल्लाह तआला हमारे ईमानों को सलामत रखे तथा कभी हमारे ईमान विचलित न हों। अल्लाह तआला से हमारा वह सम्बंध पैदा हो जाए जो निकट के रिशतेदारों की सहायता करने का सम्बंध है फिर हम अल्लाह तआला की कृपाओं के दृश्य भी पहले से बढ़ कर देखेंगे, इन्शाअल्लाह तआला। और जो दुश्मन हैं अल्लाह तआला की नज़र में तथा सुधरने योग्य नहीं हैं अल्लाह तआला की दृष्टि में, अल्लाह तआला इन्हें स्वयं नष्ट करे और इन्शाअल्लाह जब ऐसी अवस्था होगी, जब हमारा सम्बंध अल्लाह तआला से होगा तो दुश्मन के विनाश के दृश्य भी हम देखेंगे।

☆ ☆ ☆

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब का अरब के प्रति प्यार

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

आप अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं : "हे मूल रूप से अरब देश के संयमियो तथा बुज़ुर्ग लोगो! तुम पर सलामती हो। हे नबी के देश के निवासियो और अल्लाह के महान घर के पड़ोसियो! तुम पर सलामती हो। तुम इस्लाम की क़ौमों में से सर्वश्रेष्ठ हो और महान तथा प्रतिष्ठावान ख़ुदा की जमात के सबसे श्रेष्ठ लोग हो। कोई भी क़ौम तुम्हारी शान तक नहीं पहुंच सकती, तुम सम्मान, महानता और प्रतिष्ठा में सबसे आगे बढ़ गए हो। और तुम्हारे लिए यह गर्व ही पर्याप्त है कि अल्लाह ने अपनी वह्यी को आदम से शुरू किया और उस पैगंबर पर समाप्त कर दिया जो तुम में से था, और तुम्हारी भूमि उसकी मातृभूमि और निवास स्थान और उसका जन्मस्थान थी। और सृष्टि के पथप्रदर्शक मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में तुम्हें क्या पता कि वह किस शान के नबी हैं। आप का उपकार हर छोटे-बड़े पर सिद्ध है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह्यी ने समस्त वास्तविक अर्थों तथा रहस्यों तथा गंभीर बिंदुओं को स्पष्ट कर दिया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म ने सत्य के वह समस्त ज्ञान तथा सन्मार्ग के तरीक़े जो कि मुर्दा थे उनमें जान डाल दी। हे अल्लाह! ज़मीन में जितनी पानी की बूंदें, धूल के कण, ज़िंदे और मुर्दे हैं और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़ाहिर या छुपा हुआ है उन सबकी संख्या के बराबर तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद, रहमत, सलामती और बरकत नाज़िल फ़रमा। और हमारी तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना सलाम पहुंचा जो आसमान को किनारों तक भर दे। भाग्यशाली है वह क़ौम जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का बोझ अपनी गर्दनों पर उठा ले और भाग्यशाली है वह दिल जो आप तक पहुंचा, आप से मिला और आप की मुहब्बत में फ़ना हो गया। हे उस देश के निवासियो ! जिस पर मुहम्मद मुस्तफ़ा के पवित्र क़दम पड़े हैं, अल्लाह तआला तुम पर रहम करे और तुमसे राज़ी हो और तुम्हें ख़ुश रखे। हे अल्लाह के बंदो! मैं तुम्हारे बारे में बहुत हुस्न-ए-ज़न (सुधारणा) रखता हूँ और मेरी रूह तुम से मिलने के लिए प्यासी है। मैं तुम्हारे देशों तथा बस्तियों का इसलिए बहुत इच्छुक हूँ ताकि मैं उन स्थानों को देख सकूँ जहां सर्वश्रेष्ठ हस्ती के कदम पड़े और उस मिट्टी को अपनी आँखों का सुरमा बनाऊँ। और उस की भलाई और भले लोगों से मिलूँ और उस के विशेष आसार और विद्वानों से (मिलूँ) और मेरी आँखें उस देश के औलिया तथा बड़े बड़े पवित्र स्थलों को देखकर ठंडी हों। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह मुझे तुम्हारा देश देखना नसीब करे और अपनी असीम कृपा से मुझे तुम्हें देखने की खुशी नसीब करे।

हे मेरे भाइयो! मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारी मातृभूमि से प्यार करता हूँ, मुझे तुम्हारी सड़कों की मिट्टी और तुम्हारी गलियों के पत्थरों से प्यार है, और मैं तुम्हें दुनिया की हर चीज़ पर प्राथमिकता देता हूँ। हे अरब के जिगर के टुकड़ो ! अल्लाह तआला ने तुमको विशेष बरकतों और असंख्य गुणों और बड़ी

बड़ी रहमतों का आशीर्वाद दिया है। तुम्हारे बीच अल्लाह का वह घर है, जिसके कारण बस्तियों की माँ (मक्का) को बरकत दी गई, और तुम्हारे बीच उस पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मज़ार है, जिसने पूरी दुनिया में एकेश्वरवाद को फैलाया और अल्लाह का तेज प्रकट किया और उसकी महिमा दिखाई। और तुम में से ऐसे लोग थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की पूरे दिल से, पूरी आत्मा से और अपने पूरे दिमाग से मदद की, और अपना माल और अपनी जानें अल्लाह के धर्म तथा उसकी पवित्र पुस्तक के प्रचार-प्रसार के लिए न्योछावर कर दीं। अत: तुम इन विशेषताओं से विशिष्ट हो और जिसने तुम्हारा सम्मान नहीं किया, उसने अन्याय किया और उल्लंघन किया। हे मेरे भाइयो, मैं अपना यह पत्र टूटे हुए दिल और बहते आँसुओं के साथ तुम्हें लिख रहा हूँ इसलिए तुम मेरी बात सुनो। अल्लाह तआला तुम्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

मैं वह व्यक्ति हूं कि अल्लाह तआला ने अपनी विशेष कृपा से मेरा पोषण किया है और मुझ पर पूर्ण उपकार किया और उसने मुझसे किसी चीज़ की कमी नहीं की और मुझे उन लोगों में से बनाया जिनसे वह वार्तालाप करता और जिनको इलहाम करता है और उसने मुझे अपनी ओर से ज्ञान प्रदान किया है और अपने पसंदीदा मार्गों तथा संयम की गलियों की ओर मेरा मार्गदर्शन किया और मुझ पर उसने अपने बड़े बड़े भेद खोले। अत: कभी तो उसने ऐसे वार्तालाप से मेरी सहायता की जो बहुत स्पष्ट थे और उनमें न ही कोई संदेह था और न कोई शक। और कभी उसने मुझे ऐसे कश्फ़ के प्रकाश से प्रकाशमान किया जो चमकदार दिन के समान स्पष्ट थे। और उसके महान उपकारों में से यह भी है कि उसने मुझे इस दौर और इस ज़माने के लिए इमाम और ख़लीफ़ा बनाया है और मुझे मुजद्दिद के तौर पर इस सदी के आरंभ में अवतरित किया है ताकि मैं लोगों को अंधेरों से प्रकाश की ओर निकालूं और उन्हें गुमराही तथा उपद्रव के मार्गों से निकालकर संयम की चौड़ी सड़क की ओर ले जाऊं। और उसने मुझे वह चीज़ दी जो दिलों को स्वस्थ करती है और महसूस होने वाले संदेह दूर करती है और सृष्टि से अंधेरों को दूर करती है। निस्संदेह उसने इस ज़माने को मुश्किलों में कैद और जटिल समस्याओं में फंसा हुआ पाया और बिदअतों, बुराइयों तथा अंधकारों के नीचे नष्ट होने वाला पाया। तो उसने इरादा किया कि वह इस ज़माने के लोगों को उन आफतों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की विपत्तियों से मुक्ति दे। उसने पादरी तथा ईसाई दार्शनिकों के उपद्रव को देखा कि वे लोगों के बीच से निकलकर जंगलों तक फैल गया है और इरादों से शुरु होकर बुरे कर्मों को व्यावहारिक रूप से करने तक और पृथ्वी की सतह से उठकर पहाड़ों तक पहुंच गया है। और उसने देखा जो उन्होंने बहुत बड़ी उद्दंडता की है और उन्होंने अपने मामले को अतिशयोक्ति में चरम तक पहुंचा दिया है और प्रतिष्ठावान रब ने देखा कि उनके उपद्रव की बारीकियों तथा उनकी बुद्धि की सूक्ष्मता से और उनकी चालाकियों की विचित्र बातों से और उनके ज्ञान के जादू तथा उनकी कलाओं के इंद्रजाल से और उनके बहुत बड़े धोखे की वजह से बहुत से लोग परीक्षा में डाले गए हैं। और उसने देखा कि वे लोगों के धर्म और उनके ईमान को लूट रहे हैं और वह लोगों के दिलों तथा उनकी आंखों और उनके कानों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं और लोगों को गुमराह करने

के लिए ज्ञात तथा अज्ञात हर प्रकार के रास्तों पर दूर तक चले जाते हैं और अपने छल-कपट से अंधकार को प्रकाश के समान दिखा रहे हैं और उनकी तहरीकों से ही हिंदुओं में से एक क़ौम जो अपना नाम आर्य रखती है, निकली है।.....

और एक महान मुबारक निशान यह है कि जब उसने ईसाइयों के उपद्रव को देखा और पाया कि वे (इस्लाम) धर्म से बहुत रोकते हैं। और उसने देखा कि वे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पीड़ा पहुँचाते हैं और उनका अपमान कर रहे हैं और इब्न मरियम की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा करते हैं, तो स्वाभिमान के कारण उसका क्रोध भड़क उठा। और उसने मुझे पुकारा और कहा, "मैं तुम्हें मरियम का पुत्र ईसा बनाता हूं, और अल्लाह सब कुछ करने में सक्षम है।" और अल्लाह हर बात पर समर्थ है। तो, मैं अल्लाह का वह स्वाभिमान हूं, जो कि सही समय पर जोश में आया ताकि जो लोग ईसा के बारे में अतिशयोक्ति करते हैं, उन्हें पता चले कि यीशु अल्लाह के एक होने की तरह अकेला नहीं है, और यह कि अल्लाह तआला सक्षम है कि वह अपने नबी सअव की उम्मत में से एक को ईसा बना दे और यह वादा पूरा होने वाला था। हे भाइयो! ये वह बात है जिसे अल्लाह ने पिछली सदियों की नज़रों से छुपा कर रखा था इसका विवरण हमारे समय में प्रकट किया। वह जो चाहता है छुपाता है और जो चाहता है उसे प्रकट कर देता है। और इसके उदाहरण अतीत में बीत चुके हैं। और इस गुप्त विधि को अपनाने में दो प्रमुख युक्तियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए बेहतर और अधिक उपयुक्त समझा है।

पहली तो यह है कि यह ख़बर ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से एक थी और इसके प्रकटन का समय बहुत दूर था। और अल्लाह तआला जानता था कि वह इसे लंबे समय और लंबी अवधि के बाद और कई क़ौमों के इस दुनिया से चले जाने के बाद ही प्रकट करेगा। और वह यह भी जानता था कि पहली क़ौमों को इस संक्षिप्त (अस्पष्ट) की व्याख्या तथा उसके महान विवरण से कोई लाभ नहीं होगा। और वह जानता था कि इस समाचार के प्रकट होने से पहले वे सभी मर जाएंगे और इसका विवरण उनके लिए किसी काम का नहीं होगा। इसलिए उसने चाहा कि जो उन्हें नहीं मिल सका उसके बदले में वह उन्हें ईमान लाने का पुण्य दे और उनके (उस पर) विश्वास करने के बाद उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। इसलिए उसने अपनी वाह्यी में इस ख़बर के विवरण को छोड़ दिया, और एक रहस्य की तरह एक सूक्ष्म अस्पष्टता को एक सारांश के रूप में अपनाया, और इस सारांश को रूपकों के साथ अलंकृत किया और इसे लाक्षणिक्ताओं तथा गुप्त संकेतों के साथ रंग दिया। और उसने इस इजमाल को अक़ल, समझ और अटकलों से दूर रखा, ताकि वह उनकी परीक्षा ले सके कि उनमें से कौन इस मामले का अनुसरण करता है। अत: वे ईमान ले आए और अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और उन्हें सबसे अच्छा इनाम दिया। क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के बारे में सुधारणा से काम लिया और उस बात पर ईमान ले आए जिसके बारे में वे सच्चाई नहीं जानते थे और न ही उसके स्वरूप की कोई समझ रखते थे। (अत्तब्लीग़, आईना कमालात-ए-इस्लाम)

★ ★ ★

पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त पादरी सज्जनों के लिए फैसले का एक उत्तम तरीक़ा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक लिखते हैं :

"ईसाई लोगों का यह विश्वास है कि जो लोग तस्लीस की आस्था और यसू का कफ़्फ़ारा नहीं मानते, वे शाश्वत नर्क में डाले जाएंगे और वह विश्वास जो ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम (वाणी) पवित्र क़ुर्आन के द्वारा मुसलमानों को सिखाया है वह यह है कि एकेश्वरवाद के बिना मुक्ति नहीं। यही एकेश्वरवाद (तौहीद) है जिसके अनुसार समस्त संसार की पकड़ होगी चाहे क़ुर्आन उन तक न पहुंचा हो। क्योंकि यह इन्सान के दिल में स्वभाविक तौर पर अंकित है कि उसका सृष्टा और मालिक अकेला ख़ुदा है जिसके साथ कोई भागीदार नहीं। इस एकेश्वरवाद में कोई भी ऐसी बात नहीं जो ज़बरदस्ती मनवानी पड़े क्योंकि इन्सानी दिल की बनावट के साथ ही इसके नक़्श मनुष्य के दिल में अंकित किये जाते हैं।

परन्तु जैसी कि ईसाइयों की आस्था है असीमित ख़ुदा को तीन उक़्नूम में या चार उक़्नूम में सीमित करना और फिर प्रत्येक उक़्नूम को पूर्ण भी समझना और तरकीब का मुहताज भी और फिर ख़ुदा के बारे में यह वैध रखना कि वह प्रारंभ में कलिमा था फिर वही कलिमा जो ख़ुदा था मरयम के पेट में पड़ा और उसके ख़ून से साक्षात् हुआ और स्वाभाविक मार्ग से पैदा हुआ और समस्त दुःख, ख़सरा, चेचक, दांतों का कष्ट जो मनुष्य को होते हैं, वे सब उठाए। अन्त में जवान होकर पकड़ा गया और सलीब पर चढ़ाया गया। यह अत्यन्त गन्दा शिर्क है जिसमें मनुष्य को ख़ुदा ठहराया गया है। ख़ुदा इस से पवित्र है कि वह किसी के पेट में पड़े और शरीर ग्रहण करे और शत्रुओं के हाथों गिरफ़्तार हो। मानवीय प्रकृति इस को स्वीकार नहीं कर सकती कि ख़ुदा पर ऐसे दुःख की मार और ये संकट पड़ें और वह जो समस्त श्रेष्ठताओं का मालिक और समस्त सम्मानों का उद्गम है अपने लिए ये समस्त अपमान रखे। ईसाई इस बात को मानते हैं कि ख़ुदा की बदनामी का यह पहला ही अवसर है और इस से पूर्व ख़ुदा ने इस प्रकार के अपमान कभी नहीं उठाए। कभी यह बात घटित नहीं हुई कि ख़ुदा भी मनुष्य की तरह किसी स्त्री के गर्भाशय में वीर्य में मिश्रित होकर ठहर गया हो, जब से कि लोगों ने ख़ुदा का नाम सुना कभी ऐसा नहीं हुआ कि वह भी मनुष्य की भांति किसी स्त्री के पेट से पैदा हुआ हो। ये समस्त वे बातें हैं जिन का ईसाइयों को स्वयं इक़रार है, और इस बात का भी इक़रार है कि यद्यपि पहले ये तीन उक़्नूम तीन शरीर पृथक-पृथक नहीं रखते थे, परन्तु इस विशेष युग से जिसको अब 1896 वर्ष हो रहे हैं तीनों उक़्नूम के लिए तीन पृथक-पृथक शरीर निर्धारित हो गए। बाप का वह रूप है जो आदम का है क्योंकि उसने आदम को अपने रूप पर बनाया। देखो तौरात पैदायश अध्याय-1 आयत-27 और बेटा यसू के रूप पर साक्षात् हुआ। देखो यूहन्ना, अध्याय-1, आयत-1 और रूहुल क़ुदूस कबूतर के रूप में साक्षात् हुआ। देखो मती अध्याय-3, आयत-16 अब जिस ने ईसाइयों के इन तीन साक्षात् ख़ुदाओं का दर्शन करना हो और उनकी शारीरिक तस्लीस का नक़्शा देखना चाहता हो तो

कुछ ज़रूरी नहीं कि उनकी ओर याचना ले जाए अपितु जैसा कि हम ने पुस्तक 'सतबचन' में सिक्ख सज्जनों के गुप्त चोले की गुरु के समस्त चेलों को दर्शन करा दिया है इसी प्रकार हम यसू के शागिर्दों को भी उन के तीन साक्षात् ख़ुदाओं के दर्शन करा देते हैं और उनके त्रिकोणीय तस्लीसी ख़ुदा को दिखा देते हैं। चाहिए कि उसके आगे झुकें और नतमस्तक हों और वह यह है जिसको हम ने ईसाइयों की प्रकाशित तस्वीरों से लिया है। ...

ये तीनों साक्षात् ख़ुदा ईसाइयों के विचार में हमेशा के लिए साक्षात् और हमेशा के लिए पृथक-पृथक अस्तित्व रखते हैं और फिर भी तीनों मिलकर एक ख़ुदा है। परन्तु यदि कोई बता सकता है तो हमें बता दे कि बावजूद इस शाश्वत मजस्सिम और परिवर्तन के ये तीनों एक क्योंकर हैं। भला हमें कोई डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और पादरी इमादुद्दीन और पादरी ठाकुरदास को उनके पृथक-पृथक शरीर के बावजूद एक करके तो दिखा दे। हम दावे से कहते हैं कि यदि तीनों को कूट कर भी कुछ का मांस कुछ के साथ मिला दिया जाए तो फिर भी जिन को ख़ुदा ने तीन बनाया था कदापि एक नहीं हो सकेंगे। फिर जबकि इस फ़ानी (नश्वर) शरीर के प्राणी बावजूद पृथक-पृथक तथा परिवर्तनशील शरीर होने की संभावना के बावजूद एक नहीं हो सकते, फिर ऐसे तीन मुजस्सम जिनमें ईसाइयों की आस्था के अनुसार अवयवों का पृथक-पृथक होना वैध नहीं एक क्योंकर हो सकते हैं।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ईसाइयों के ये तीन ख़ुदा कमेटी के तीन सदस्यों के तौर पर हैं और उनके विचार में तीनों की राय की सहमति से प्रत्येक आदेश लागू होता है या राय के बहुमत से फैसला होता है मानो ख़ुदा का कारख़ाना भी प्रजा तांत्रिक शासन है और मानो उनके गाड साहिब को भी **व्यक्तिगत शासन की योग्यता नहीं।** समस्त आधार कोंसिल पर है।

अत: ईसाइयों का यह मिश्रित ख़ुदा है जिसने देखना हो देख ले। पादरी सज्जन ऐसे ख़ुदा वाले धर्म पर तो गर्व करते हैं परन्तु इस्लाम जैसे धर्म का जो ऐसी बुद्धि के विपरीत बातों से पवित्र है अपमान और तिरस्कार कर रहे हैं और दिन-रात यही कार्य है कि अपने दज्जाली धोखों से ख़ुदा के पवित्र और सच्चे नबी को झूठा ठहराएं और बुरी-बुरी तस्वीरों में उस नूरानी रूप को दिखाएं। कुछ अपवित्र प्रकृति के पादरियों ने अपनी पुस्तकों में हमारे सय्यिद-व-मौला ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर इस प्रकार खींच कर दिखाई है कि मानो वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसका ख़ूनी रूप है और क्रोध से भरा हुआ खड़ा है तथा एक तलवार हाथ में है और कुछ ग़रीब ईसाइयों इत्यादि को टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है। परन्तु यदि इन लोगों को कुछ इन्साफ़ और ईमान में से हिस्सा मिला होता तो इस तस्वीर से पहले मूसा की तस्वीर खींच कर दिखाते और इस प्रकार खींचते कि जैसा एक अत्यन्त निर्दयी और बेरहम इन्सान हाथ में तलवार लेकर दूध पीते बच्चों को उनकी माताओं के सामने टुकड़े-टुकड़े कर रहा है और ऐसा ही यशू बिन नून की तस्वीर प्रस्तुत करते और उस तस्वीर में यह दिखाते कि मानो उसने लाखों निर्दोष बच्चों को उनकी माताओं सहित टुकड़े-टुकड़े करके मैदान में फेंक दिया है। और चूंकि इनकी आस्थानुसार यशू ख़ुदा है और ये समस्त निर्दयता की कार्यवाहियां उस के आदेश से हुई हैं और वह साकार ख़ुदा है जैसा

कि वर्णन हो चुका। तो इस स्थिति में अत्यावश्यक था कि सर्वप्रथम उसकी तस्वीर खींचकर उसके हाथ में कम से कम तीन तलवारें दीं जातीं। पहली वह तलवार जो उसने मूसा को दी और निर्दोष दूध पीते बच्चों को क़त्ल करवाया। दूसरी वह तलवार जो यशू बिन नून को दी। तीसरी वह तलवार जो दाऊद को दी। अफ़सोस कि इस सच को छुपाने वाली क़ौम ने बड़े-बड़े अत्याचारों पर कमर बांध रखी है।

यदि तलवार द्वारा ख़ुदा का अज़ाब उतरना ख़ुदा की विशेषताओं के विरुद्ध है तो क्यों न यह आरोप सर्वप्रथम मूसा से ही आरंभ किया जाए जिसने क़ौमों को क़त्ल करके ख़ून की नहरें बहा दीं और किसी की तौब: को भी स्वीकार न किया। क़ुर्आनी युद्धों ने तो तौब: का दरवाज़ा खुला रखा जो बिल्कुल प्रकृति के नियम और ख़ुदा की दया के अनुकूल है। क्योंकि अब भी जब ख़ुदा तआला ताऊन और हैज़ा इत्यादि से दुनिया पर अपना अज़ाब उतारता है तो साथ ही तबीबों (वैद्यों) को ऐसी-ऐसी बूटियों और उपायों का भी ज्ञान दे देता है जिस से उस संक्रामक रोग की अग्नि का निवारण हो सके। अत: यह मूसा के युद्ध की पद्धति पर आरोप है कि उसमें प्रकृति के नियम के अनुसार बचाव का कोई तरीक़ा स्थापित नहीं किया गया। हाँ कुछ-कुछ स्थानों पर स्थापित भी किया गया है परन्तु पूर्ण रूप से नहीं। अतएव जब कि यह सुन्नतुल्लाह अर्थात् तलवार से अत्याचारी विरोधियों को मारना सदैव से चला आता है तो पवित्र क़ुर्आन पर क्यों विशेष तौर पर ऐतराज़ किया जाता है। क्या मूसा के युग में ख़ुदा कोई और था और इस्लाम में कोई और हो गया? या ख़ुदा को उस समय लड़ाइयां प्रिय लगती थीं और अब बुरी दिखाई देती हैं?

यह अन्तर भी स्मरण रहे कि इस्लाम ने केवल उन लोगों के मुक़ाबले पर तलवार उठाने का आदेश दिया है कि पहले स्वयं तलवार उठाएं और उन्हीं के क़त्ल करने का आदेश दिया है जो पहले आप क़त्ल करें। यह आदेश कदापि नहीं दिया कि तुम एक काफ़िर बादशाह के अधीन होकर और उसके न्याय और इन्साफ़ के लाभ उठाकर फिर उसी पर विद्रोह पूर्ण आक्रमण करो। क़ुर्आन की दृष्टि से यह बदमाशों का तरीक़ा है न कि नेक लोगों का। परन्तु तौरात ने यह तरीक़ा कहीं खोलकर वर्णन नहीं किया। इस से स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन अपने जलाली (प्रतापी) और जमाली (सौम्य) आदेशों में न्याय और इन्साफ़ तथा दया एवं उपकार के उस बीच के मार्ग पर चलता है जिस का उदाहरण दुनिया में किसी पुस्तक में मौजूद नहीं। परन्तु अंधे दुश्मन फिर भी ऐतराज़ करते हैं। क्योंकि उनकी प्रकृति प्रकाश से बैर और अंधकार से प्रेम रखती है।

अब इस विज्ञापन के लिखने का उद्देश्य यह है कि हमने बड़े लम्बे अनुभव से परख लिया है कि ये लोग बार-बार दोषी और निरुत्तर होकर फिर भी डंक मारने से नहीं रुकते और उस व्यक्ति को समस्त दोषों से पवित्र समझते हैं जिसने स्वयं इक़रार किया कि **"मैं नेक नहीं"** और जिसने मदिरापान और जुआ तथा खुले तौर पर दूसरों की स्त्रियों को देखना वैध रख कर अपितु स्वयं एक व्याभिचारिणी वैश्या से अपने सर पर हराम की कमाई का तेल डलवाकर और उसको यह अवसर देकर कि वह उसके शरीर से शरीर लगाए, अपनी समस्त उम्मत को अनुमति दे दी कि इन बातों में कोई बात भी अवैध नहीं। तो ऐसे व्यक्ति को तो उन्होंने ख़ुदा बना लिया परन्तु ख़ुदा के मुक़द्दस नबियों को जिन का जीवन केवल ख़ुदा के लिए

था और जो संयम के बारीक मार्गों को सिखा गए, बुरा कहना और गालियां देना आरंभ कर दिया। अत: अब तक ये लोग रुके नहीं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निन्दा में अत्यन्त अपवित्र और कष्टदायक थिएटर निकालते हैं और नितान्त बुरी तस्वीरों में उस पवित्र अस्तित्व को दिखाते हैं।

अब ऐसे झूठों से मौखिक मुबाहसों से क्योंकर फैसला हो। हम झूठे को मुंहतोड़ उत्तर से दोषी तो ठहरा सकते हैं परन्तु उस का मुंह क्योंकर बन्द करें। उसकी गन्दी जीभ पर कौन सी थैली चढ़ा दें? उसके गालियां देने वाले मुंह पर कौन सा ताला लगा दें? क्या करें? क्या कोई इस से अनभिज्ञ है कि नालायक इमादुद्दीन ने उस पवित्र अस्तित्व नबी के बारे में क्या-क्या गन्दे शब्द प्रयोग किए, जिस से समस्त मुसलमानों के कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गए। 'नूर अफ़्शां' पर्चा लुधियाना में कैसे-कैसे साप्ताहिक केवल इफ़्तिरा की बुनियाद पर इस्लाम के अपमान के वाक्य लिखे जा रहे हैं। रेवाड़ी वाले पादरी ने मुसलमानों का कितना दिल जलाया और हमारे सय्यिद-व-मौला को डाकू तथा बाटमार ठहराया। तो कहां तक लिखें। अत्याचारी पादरियों ने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाखों गालियां देकर हमारे दिलों को ज़ख़्मी कर दिया।

परन्तु हम अन्याय करने वाले होंगे यदि साथ ही यह भी गवाही न दें कि इन कार्यवाहियों में सरकार पर कोई आरोप नहीं। नि:सन्देह सरकार प्रत्येक क़ौम को एक ही आंख से देखती है। धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी जैसी कि पादरियों को प्राप्त है वैसी ही हमें भी है यदि हम सरकार के न्याय पर विश्वास न रखते तो संभव न था कि इन अपनी शिकायतों को अभिव्यक्त भी कर सकते। परन्तु हम सरकार को यह कष्ट देना ही नहीं चाहते कि वह धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी को बिलकुल बन्द कर दें। हाँ हमारा उद्देश्य यह है कि उन शर्तों की पाबन्दी से इस आज़ादी को कुछ सीमित कर दिया जाए जिसके बारे में हम एक पृथक विज्ञापन प्रकाशित कर चुके हैं। परन्तु सरकार अपने राजकीय कार्यों में व्यस्त है। उसको इस फ़ैसले के लिए तो फ़ुर्सत नहीं कि एकेश्वरवाद और तीन साकार ख़ुदाओं की आस्था के बारे में कुछ अपनी राय लिखे और वह कार्यवाही करे। जैसा कि तीसरी सदी के बाद कान्सटनटायन फर्स्ट कुस्तुनतुनिया के बादशाह ने अढ़ाई सौ बिशप को जमा करके अपनी सभा में एकेश्वरवादी ईसाइयों और तीन उक़्नूम के समर्थक ईसाइयों का परस्पर मुबाहसा कराया था और अन्त में एकेश्वरवादी फ़िर्क़े को डिग्री दी थी और स्वयं भी उनका धर्म स्वीकार कर लिया था ऐसी ही यह उच्च सरकार भी करे[1]।★ परन्तु यह सरकार ऐसे

[1]★**हाशिया :-** ईसाइयों में तस्लीस की समस्या तीसरी सदी के बाद अविष्कृत हुई है जैसा कि डिरेपर भी अपनी पुस्तक में बड़े-बड़े उलेमा के हवाले से लिखता है कि इस समस्या का अविष्कारक बिशप अथानासियत एस अलैक्ज़न्ड्रायन था जो तीसरी शताब्दी के बाद हुआ है। जब उसने यह समस्या प्रकाशित करना चाही तो उसी समय बिशप ऐरी एस. उसका इन्कारी खड़ा हो गया और इस मुबाहसे में जन सामान्य और विशेष लोगों का यहां तक जमावड़ा हुआ कि रूम के बादशाह तक ख़बर पहुंच गई। संयोग से उसको मुबाहसों से दिलचस्पी थी। उसने चाहा कि इस मतभेद को अपने सामने ही दोनों पक्षों के उलेमा से दूर कराए अत: उसकी सभा में बड़ी तल्लीनता से ये मुबाहसे हुए और अत्यन्त आनन्द पूर्वक कोन्सिल की कुर्सियां बिछीं और मुनाज़रा करने वाले दो सौ पचास प्रसिद्ध पादरी थे। अन्त में एकेश्वरवादियों का फ़िर्क़ा जो यसू को केवल इन्सान और रसूल जानता था विजयी हुआ। उसी दिन बादशाह ने यूनिटेरियन का

झगड़ों में पड़ना नहीं चाहती। अत: ये प्रतिदिन के बढ़े हुए झगड़े क्योंकर निर्णय पाएं। मुबाहसों के नेक परिणामों से तो निराशा हो चुकी अपितु जैसे-जैसे मुबाहसे बढ़ते जाते हैं वैसे ही वैर भी साथ साथ उन्नति करते जाते हैं। तो इस निराशा के समय में मेरे नज़दीक एक अत्यन्त सरल और आसान फ़ैसले का तरीक़ा है यदि पादरी लोग स्वीकार कर लें और वह यह है कि इस बहस का जो सीमा से अधिक बढ़ गई है ख़ुदा तआला से फ़ैसला कराया जाए।

सर्वप्रथम मुझे यह वर्णन करना आवश्यक है कि ऐसा ख़ुदाई फ़ैसला कराने के लिए सब से अधिक मुझमें जोश है और मेरी हार्दिक मनोकामना है कि इस तरीक़े से यह प्रतिदिन का झगड़ा तय हो जाए। यदि मेरे समर्थन में ख़ुदा का फ़ैसला न हो तो मैं अपनी कुल चल-अचल सम्पत्ति जो दस हज़ार रुपये के मूल्य से कम न होगी, ईसाइयों को दे दूंगा और अग्रिम राशि के तौर पर तीन हज़ार रुपये तक उनके पास जमा भी करा सकता हूँ। इतने माल का मेरे हाथ से निकल जाना मेरे लिए पर्याप्त दण्ड होगा। इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि मैं अपने हस्ताक्षर द्वारा प्रकाशित करूंगा कि ईसाई विजयी हुए और मैं हार गया इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि इस विज्ञापन में कोई भी शर्त न होगी न शब्दों की दृष्टि से न अर्थों की दृष्टि से।

और ख़ुदाई फ़ैसले के लिए यह तरीक़ा होगा कि मेरे मुक़ाबले पर एक प्रतिष्ठित पादरी साहिब जो निम्नलिखित पादरियों में से चुने जाएं।[2]★ मुक़ाबले का मैदान के लिए जो दोनों पक्षों की सहमति से निर्धारित किया जाए, तैयार हूँ। तत्पश्चात् हम दोनों अपनी-अपनी जमाअतों के साथ निर्धारित मैदान में उपस्थित हो जाएं। और ख़ुदा तआला से दुआ के साथ यह फ़ैसला चाहें कि हम दोनों में से जो व्यक्ति ख़ुदा की नज़र में वास्तव में झूठा और प्रकोप का पात्र है। ख़ुदा तआला एक वर्ष में उस झूठे पर वह प्रकोप उतारे जो अपने स्वाभिमान की दृष्टि से हमेशा झूठी और झुठलाने वाली क़ौमों पर किया करता है। जैसा कि उसने फ़िरऔन पर किया, नमरूद पर किया और नूह की क़ौम पर किया और यहूदियों पर किया। पादरी साहिबान यह बात स्मरण रखें कि इस परस्पर दुआ में किसी विशेष सदस्य पर लानत है न बद्दुआ है। अपितु उस झूठे को दण्ड दिलाने के उद्देश्य से है जो अपने झूठ को छोड़ना नहीं चाहता। एक संसार के जीवित होने के लिए एक का मरना उत्तम है।" (अंजाम-ए-आथम पृष्ठ 40-48)

★ ★ ★

धर्म ग्रहण कर लिया और उसके बाद छ: बादशाह एकेश्वरवादी रहे। अत: जिस क़ैसर को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पत्र लिखा था। जिस की चर्चा सही बुख़ारी में प्रथम पृष्ठ में ही मौजूद है। वह भी एकेश्वरवादी ही था। उसने क़ुर्आन के इस विषय पर सूचना पाकर कि मसीह केवल इन्सान है पुष्टि की। जैसी कि नज्जाशी ने भी जो ईसाई बादशाह था क़सम खाकर कहा कि यसू का पद इस से तनिक भी अधिक नहीं जो क़ुर्आन ने उसके बारे में लिखा है। परन्तु नज्जाशी इसके बाद खुला-खुला मुसलमान हो गया। इसी से।

★ **नोट -** इन सज्जनों में से कोई चुना जाना चाहिए-प्रथम-डॉक्टर मार्टिन क्लार्क, द्वतीय-पादरी इमादुद्दीन, फिर पादरी ठाकुर दास, या हुसामुद्दीन बम्बई, या सफ़दर अली भिण्डारा या तामस हावल, या फ़तह मसीह दूसरों की अनुमति की शर्त के साथ।

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-2

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

ख़ुदा तआला की किताब क़ुर्आन करीम से यह बिल्कुल निर्णय हो चुका है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं। आश्चर्य कि ख़ुदा तआला तो क़ुर्आन करीम के अनेक स्थानों में हज़रत ईसा की मृत्यु प्रकट करता है और लोग उसे आकाश से उतार रहे हैं। क्या अब क़ुर्आन करीम के क़िस्से भी निरस्त हो गए? यह वही क़ुर्आन है जिसकी एक आयत सुनकर एक लाख सहाबा ने सर झुका दिया था और अविलम्ब स्वीकार कर लिया था कि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वल्लम) से पूर्व समस्त नबी ईसा इत्यादि मृत्यु पा चुके हैं और वही क़ुर्आन है जो बार-बार आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है और आप लोगों को उसकी कुछ भी परवाह नहीं। आप लोग मेरी बड़ी-बड़ी पुस्तकों को तो नहीं देखते तथा फ़ुर्सत ही कहां है परन्तु यदि मेरी पुस्तक 'तुहफ़ा गोलड़विया' और 'तुहफ़ा गज़नविया' को ही देखो जो पीर मेहर अली शाह, और गज़नवी जमाअत के मौलवी अब्दुल जब्बार, अब्दुल वाहिद तथा अब्दुल हक़ इत्यादि के मार्ग-दर्शन हेतु लिखी गई हैं जिन्हें आप लोग केवल दो घंटे के अन्दर बड़े चिन्तन मनन के साथ पढ़ सकते हैं तो आप को ज्ञात हो जाएगा कि मसीह के बारे में क़ुर्आन करीम क्या कहता है। आप स्मरण रखें कि आप जो मसीह के जीवित रहने पर इतना बल देते हैं यह ख़ुदा के कलाम के आशय के विपरीत है। हे प्रिय लोगो ! स्मरण रखो कि जिस व्यक्ति ने आना था आ चुका और शताब्दी जिसके सर पर मसीह मौऊद को आना चाहिए था उसमें से भी सत्रह वर्ष व्यतीत हो गए और इस शताब्दी हिज्री में जिस पर उम्मत के वलियों की दृष्टि लगी हुई थी उसमें तुम्हारे कथनानुसार एक छोटा सा मुजद्दिद भी पैदा न हुआ और मात्र एक दज्जाल पैदा हुआ। क्या इन धृष्टताओं का ख़ुदा के दरबार में उत्तर नहीं देना पड़ेगा? यद्यपि हृदय कैसे ही कठोर हो गए हैं परन्तु इतना तो भय करना चाहिए था कि जो व्यक्ति शाताब्दी के आरम्भ में पैदा हुआ तथा रमज़ान के चन्द्र और सूर्य ग्रहण ने उसकी साक्ष्य दी तथा इस्लाम की वर्तमान कमज़ोरी और शत्रुओं के निरन्तर प्रहारों ने उसकी आवश्यकता सिद्ध की तथा पूर्व वलियों के कश्फ़ों ने इस बात पर निश्चित रूप से मुहर लगा दी कि वह चौदहवी शताब्दी हिज्री के सर पर पैदा होगा और यह कि पंजाब में पैदा होगा। ऐसे व्यक्ति को झुठलाने में शीघ्रता न करते। अन्ततः एक दिन मरना है तथा सब कुछ यहीं छोड़ जाना है देखो यदि मैं ख़ुदा की ओर से हुआ और तुम ने मुझे झूठा कहा और मुझे काफ़िर ठहराया और दज्जाल नाम दिया तो ख़ुदा को क्या उत्तर दोगे? क्या उन्हीं के समान उत्तर है जो यहुदियों और ईसाइयों ने आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से इन्कार करने के समय अपनी किताबों में लिखे हैं कि तौरात के समस्त निर्धारित निशान पूरे नहीं हुए तथा कुछ रह गए हैं। अतः बहुत समय हुआ कि ख़ुदा उन्हें उत्तर दे चुका कि जो कुछ तुम्हारे हाथ में है वह सब कुछ ठीक नहीं है और न वे समस्त अर्थ सही हैं जो तुम कर रहे हो। जो व्यक्ति हकम (मध्यस्थ) बना कर भेजा गया है उसकी बात सुनो। अतः यही उत्तर अब ख़ुदा तआला की ओर से है। चाहो तो स्वीकार करो। खेद है! आप लोगों को चाहिए था कि यहूदियों और ईसाइयों के क़िस्से

से शिक्षा लेते। उन लोगों का हज़रत मसीह और हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन के बारे में यही विवाद था कि हम नहीं मानेंगे जब तक समस्त लक्षण पूरे न हो जाएं और दीर्घ समय गुज़रने एवं अनेकों परिवर्तनों के कारण यह सम्भव था। इसलिए वे कुफ़्र पर मरे। अत: तुम इसी प्रकार ठोकर मत खाओ जो यहूदी और ईसाई खा चुके हैं। यदि तुम्हारा समस्त भण्डार उचित होता तो फिर हकम के आने की क्या आवश्यकता थी। प्रत्येक सम्प्रदाय का यही विचार है कि जो कुछ मेरे पास है यही सही है। अब ये समस्त सम्प्रदाय तो सत्य पर नहीं। इसलिए सत्य वही है जो 'हकम' के मुख से निकले। यदि ईमान हो तो ख़ुदा के नियुक्त किए हुए हकम के आदेश से कुछ हदीसों का छोड़ना या उनकी सही व्याख्या करना कोई कठिन कार्य नहीं है। यह तुम्हारे बुज़ुर्गों के अपने मुख के प्रस्ताव हैं कि अमुक हदीस सही है और अमुक 'हसन' और अमुक 'मशहूर' और अमुक मौज़ूअ है, ख़ुदा का आदेश नहीं तथा किसी वह्यी के द्वारा यह विभाजन नहीं हुआ। फिर ऐसी हदीस जो क़ुर्आन के विपरीत हो तथा कुछ अन्य हदीसों के भी विपरीत और ख़ुदा के आदेशों से भी विपरीत हो तो क्या कारण कि उसको रद्द न किया जाए। क्या यह आवश्यक है कि जब कोई ख़ुदा की ओर से आए तो उस पर अनिवार्य है कि वर्तमान उम्मत की प्रत्येक अच्छी-बुरी बात को मान ले। यदि यह मापदण्ड है तो न हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत सिद्ध हो सकती है और न हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन की। उदाहरणतया मसीह के लिए यहूदियों के हाथ में मलाकी नबी की किताब के संदर्भ से यह निशान था कि जब तक एलिया नबी दोबारा संसार में न आए मसीह नहीं आएगा और दूसरा यह निशान कि वह एक बादशाह के रूप में प्रकट होगा तथा अन्य शक्तियों के शासन से यहूदियों को मुक्ति दिलाएगा परन्तु क्या हज़रत मसीह बादशाह होकर आए अथवा उनके आने से पूर्व एलिया नबी आकाश से उतरा? अपितु दोनों भविष्यवाणियां ग़लत निकलीं और कोई निशान हज़रत मसीह पर चरितार्थ न हुआ। अन्तत: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने व्याख्याओं से काम लिया जिनको यहूदी आज तक स्वीकार नहीं करते और उन पर उपहास करते हैं और 'ख़ुदा की शरण' उनको झूठा बनाने वाला मानते हैं और कहते हैं कि मलाकी नबी की किताब में तो स्पष्ट और साफ़ शब्दों में कहा गया था कि स्वयं एलिया नबी ही दोबारा आ जाएगा यह तो नहीं कहा था कि उनका कोई समरूप आएगा और प्रत्यक्ष इबारत पर दृष्टि डालकर देखें तो यहूदी सच्चे मालूम होते हैं। इसी प्रकार आने वाला मसीह उनकी किताबों में बादशाह के तौर पर प्रकट किया गया था इन अर्थों के अनुसार भी देखें तो यहूदी सच्चे मालूम होते हैं। इसके बावजूद इस बात में क्या संदेह है कि हज़रत मसीह सच्चे नबी हैं क्योंकि वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणियों में वास्तविक शब्दों से हट कर भी व्याख्याएं की जाती हैं और रूपक भी होते हैं, परिवर्तन और अक्षरांतरण की भी संभावना है। अत: प्रत्येक नबी या मुहद्दिस जो हकम होकर आता है वह उस जाति द्वारा प्रस्तुत बातों में से कुछ को स्वीकार करता है और कुछ रद्द कर देता है और उसके बारे में उन लोगों ने जो-जो लक्षण निर्धारित किए हुए होते हैं कुछ तो उस पर चरितार्थ हो जाते हैं और कुछ चरितार्थ नहीं होते क्योंकि उनमें कुछ मिलावट हो जाती है या विपरीत अर्थ किए जाते हैं। अत: जो व्यक्ति मेरे बारे में यह हठ करता है कि जब तक वे समस्त लक्षण जो सुन्नियों और शियों ने मसीह और महदी के बारे में बना रखे हैं पूर्ण न हो जाएं तब तक हम नहीं मानेंगे तो वह बहुत अन्याय करता है। ऐसा व्यक्ति यदि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का युग पाता

तो आप[स.] को कभी न मानता और यदि हज़रत ईसा के युग में होता तो उनको भी स्वीकार न करता। अत: सत्याभिलाषी के लिए यही मार्ग साफ़ और भयरहित है कि जिस व्यक्ति की पुष्टि के लिए आकाशीय निशान प्रकट हो चुके हों उस को झूठा कहने से डरें क्योंकि हदीसों के लेख जिनमें से प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी-अपनी विचारधारा के समर्थन में अपने पास हदीसों का एक भण्डार रखता है वास्तव में ये हदीसें कल्पना से कुछ अधिक स्तर नहीं रखतीं और कल्पना विश्वास को समाप्त नहीं कर सकती। उदाहरणतया ये समस्त काल्पनिक बातें हैं कि मसीह मौऊद आसमान से उतरेगा वरन् काल्पनिक भ्रमपूर्ण और निराधार बातें हैं। क्योंकि क़ुर्आन के विपरीत हैं और मे'राज की हदीस भी इसे झुठलाती है क्योंकि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) भी तो आकाश पर गए थे, परन्तु किस ने चढ़ते और उतरते देखा है?

अत: हे क़ौम के बुज़ुर्गों ! आप लोग जो मुझे दज्जाल और काफ़िर कहते हो तथा झूठ बनाने वाला समझते हैं। आप लोग विचार करके देख लें कि इतनी धृष्टता और दिलेरी के लिए आप के हाथ में क्या है? क्या सत्य नहीं कि क़ुर्आन करीम जो ख़ुदा की वाणी (कलाम) है उसके स्पष्ट आदेशों से तो हज़रत मसीह की मृत्यु ही सिद्ध होती है, क्योंकि ख़ुदा ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया कि वह मृत्यु पा चुका, जैसा कि आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी इस पर साक्षी है। आप लोग भली-भांति जानते हैं कि तवफ़्फ़ा के अर्थ रूह को निकालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं★ फिर यह दूसरी आयत कि 'वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल' وما محمد الّا رسول قد خلت من قبله الرُّسُل

यह वह आयत है जो आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के समय में हज़रत अबू बक़र[रज़ि.] ने यह रद्द करने के लिए पढ़ी थी कि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और इस पर समस्त सहाबा की सर्वसम्मति हो गई थी। इसी प्रकार आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मे'राज की रात में हज़रत मसीह को मृत्यु प्राप्त नबियों की जमाअत में देखा तथा आप ने यह भी फ़रमाया कि मसीह ने एक सौ बीस वर्ष की आयु पाई और आपने यह भी फ़रमाया कि यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो मेरा अनुसरण करते और क़ुर्आन में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहराया गया। अत: अब बताओ इन समस्त स्पष्ट आदेशों के पश्चात् हज़रत ईसा की मृत्यु में कौन सा संदेह रह गया। रहा मेरा दावा तो वह भी प्रमाण रहित नहीं। बुख़ारी और मुस्लिम में स्पष्ट लिखा है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और ख़ुदा ने मेरे लिए आकाश पर रमज़ान में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण किया तथा इसी प्रकार पृथ्वी पर बहुत से निशान प्रकट हुए तथा अल्लाह तआला के नियमानुसार प्रमाण पूरा हो गया। मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि यदि आप लोग अपने हृदयों को साफ़ करके ख़ुदा का कोई अन्य निशान देखना चाहें तो वह सामर्थ्यवान ख़ुदा इसके बिना कि आप लोगों की बनाई किसी नवीन बात के अधीन

★ जैसा कि शब्दकोष में तवफ़्फ़ा के अर्थ जहां ख़ुदा कर्ता और मनुष्य कर्म हो मारने के अतिरिक्ति और कुछ नहीं। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम में प्रारम्भ से अन्त तक तवफ़्फ़ा का शब्द केवल मारने और रूह निकालने के लिए प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण क़ुर्आन में अन्य कोई अर्थ नहीं। इसी से।

हो अपनी इच्छा और अधिकार से निशान दिखाने पर समर्थ है[2]★ और मैं विश्वास रखता हूँ कि यदि आप लोग सच्चे हृदय से तौबा की नीयत करके मुझ से मांग करें और ख़ुदा के सामने यह प्रण कर लें कि यदि कोई अद्भुत चमत्कार जो मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतर हो प्रकट हो जाए तो हम यह समस्त द्वेष और शत्रुता त्याग कर मात्र ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हो जाएंगे तो ख़ुदा ताआला अवश्य कोई निशान दिखाएगा क्योंकि वह कृपालु और दयालु है परन्तु मेरे अधिकार में नहीं है कि मैं निशान दिखाने के लिए दो तीन दिन निर्धारित कर दूँ या आप लोगों की इच्छानुसार चलूं। यह अल्लाह तआला के अधिकार में है जो तिथि चाहे निर्धारित करे। यदि नीयत में सत्य की अभिलाषा हो तो यह स्थान किसी विवाद का नहीं, क्योंकि जब वर्तमान युग को ख़ुदा तआला कोई नवीन निशान दिखाएगा। अत: यह तो नहीं होगा कि वह कोई पचास-साठ वर्ष निर्धारित कर दे वरन् कोई साधारण अवधि होगी जो अदालत के मुक़द्दमों अथवा व्यापारिक मामलों आदि में भी मतलबी लोग अपने लिए स्वीकार कर लेते हैं।

इस का फ़ैसला इस प्रकार से हो सकता है जब हृदयों से पूर्णतया विकार दूर किए जाएं और वास्तव में आप लोगों की इच्छा हो कि ख़ुदा की साक्ष्य के साथ फ़ैसला कर लें। इस उपाय में यह आवश्यक होगा कि कम से कम चालीस प्रसिद्ध मौलवी जैसे मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी, मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब ग़ज़नवी फिर अमृतसरी, मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही और मौलवी पीर महर अली शाह साहिब गोलड़वी एक लिखित इक़रार नामा पचास सम्मानित मुसलमानों की साक्ष्य अंकित करके अख़बार द्वारा प्रकाशित कर दें कि यदि ऐसा निशान जो वास्तव में सामान्य प्रकृति से हटकर अद्भुत हो, प्रकट हो गया तो हम प्रतापी ख़ुदा से डर कर विरोध त्याग देंगे और बैअत में सम्मिलित हो जाएंगे और यदि यह उपाय आपको स्वीकार न हो और ये विचार बाधक हो जाएं कि बैअत का ऐसा इक़रार प्रकाशित करने में हमारा अपमान है और या इतनी विनम्रता प्रत्येक व्यक्ति से असम्भव है तो एक और आसान उपाय है जिस से अधिक अन्य कोई आसान उपाय नहीं, जिसमें न आपका कोई अपमान है और न किसी मुबाहले से किसी भयानक परिणाम जैसे प्राण, धन-सम्पत्ति अथवा सम्मान के संबंध में कुछ भय है और वह यह कि आप लोग केवल ख़ुदा से डर कर तथा इस मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की उम्मत पर दया करते हुए बटाला, अमृतसर या लाहौर में एक जलसा करें और उस जलसे में जहां तक संभव हो और जितना हो सके आदरणीय उलमा तथा सांसारिक लोग एकत्र हों और मैं अपनी जमाअत के साथ उपस्थित हो जाऊं तब

2★ अभी मक्का और मदीना के लोगों के लिए भारी निशान प्रकट हुआ है। वह यह कि तेरह सौ वर्ष से मक्का से मदीना में जाने के लिए ऊंटों की सवारी चली आ रही थी प्रतिवर्ष कई लाख ऊंट मक्का से मदीना को और मदीना से मक्का को जाते थे तथा उन ऊंटों के बारे में क़ुर्आन और हदीस दोनों में से एक समान यह भविष्यवाणी थी कि एक वह युग आने वाला है कि ऊंट बेकार किए जाएंगे और उन पर कोई सवार नहीं होगा। अत: आयत وَاِذا الْعِشارُ عُطِّلَتْ और हदीस يُترك القلاصُ فَلَا يسعٰى عَليها इस पर साक्षी है। अत: यह कितनी महान भविष्यवाणी है जो मसीह के युग के अतिरिक्त मसीह मौऊद के प्रकट होने के लिए बतौर निशान के थी जो रेल की तैयारी से पूर्ण हो गई। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा। इसी से

वे सब यह दुआ करें कि हे ख़ुदा ! यदि तू जानता है कि यह व्यक्ति झूठा है और तेरी ओर से नहीं है और न मसीह मौऊद है और न महदी है तो इस उपद्रवकारी को मुसलमानों में से दूर कर और इसकी शरारतों से इस्लाम और मुसलमानों को बचा ले। जिस प्रकार तूने 'मुसैलिमा कज़्ज़ाब' और 'अस्वद अन्सी' को संसार से उठा कर मुसलमानों को उनकी शरारत से बचा लिया और यदि यह तेरी ओर से है तथा हमारी बुद्धि और समझ का दोष है तो हे शक्तिशाली ख़ुदा ! हमें विवेक प्रदान कर ताकि हम तबाह न हो जाएं तथा इसके समर्थन में कुछ ऐसी बातें और निशान प्रकट कर कि हमारे स्वभाव उन्हें स्वीकार कर लें कि यह तेरी ओर से है और जब यह दुआ हो चुके तो मैं और मेरी जमाअत ऊंचे स्वर में आमीन करे। तत्पश्चात् मैं दुआ करूंगा और उस समय मेरे हाथ में वे समस्त इल्हाम होंगे जो अभी लिखे गए हैं और कुछ नीचे लिखे जाएंगे। अत: यही प्रकाशित पुस्तक जिसमें ये समस्त इल्हाम हैं हाथ में होगा। और दुआ का लेख यह होगा कि हे ख़ुदा ! यदि ये इल्हाम जो इस पुस्तक में लिखित हैं जो इस समय मेरे हाथ में हैं जिनके अनुसार मैं स्वयं को मसीह मौऊद और महदी माहूद समझता हूँ और हज़रत मसीह को मृत्यु प्रप्त समझता हूँ तेरा कलाम नहीं है और मैं तेरे निकट झूठा, झूठ बनाने वाला और दज्जाल हूँ जिसने उम्मत-ए-मुहम्मदिया में उपद्रव डाला है और मुझ पर तेरा प्रकोप है तो मैं तेरे दरबार में विनयपूर्वक दुआ करता हूँ कि आज की तिथि से एक वर्ष के अन्दर जीवितों में से मेरा नाम काट दे और मेरा समस्त कारोबार अस्त-व्यस्त कर दे और संसार से मेरा नाम मिटा दे और यदि मैं तेरी ओर से हूँ ये इल्हाम जो इस समय मेरे हाथ में हैं तेरी ओर से हैं और मैं तेरी कृपा का पात्र हूँ तो शक्तिशाली दयालु ख़ुदा ! इसी अगले वर्ष में मेरी जमाअत को एक अद्भुत एवं विलक्षण उन्नित दे, अद्भुत बरकतें दे तथा मेरी आय में बरकत प्रदान कर और आकाशीय समर्थन उतार। जब यह दुआ हो चुके तो समस्त विरोधीजन जो उपस्थित हों आमीन कहें। (... शेष)

★ ★ ★

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर बनने वाली डाक्यूमैंटरी bloodline of christ का वर्णन करके इस में वर्णन कहानी की हक़ीक़त दरयाफ़त की। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र दिनांक 21 नवंबर 2019 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया :

उत्तर : इस से पहले भी इस मौज़ू पर कई फिल्में बन चुकी हैं और पुस्तकें भी लिखी जा चुकी हैं। इस डाक्यूमैंटरी में वर्णन हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत करने की बात तो ठीक है लेकिन उनके फ्रांस की तरफ़ हिज्रत करने वाली बात दरुस्त नहीं क्योंकि इस ज़माने में फ्रांस में उनके अनुयाईयों की कोई जमाअत नहीं थी। बल्कि उनके क़बायल तो कश्मीर के इलाक़ा में थे। इसलिए उसी तरफ़ उन्होंने हिज्रत की थी। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अमर को अपनी तसनीफ़ "मसीह हिन्दोस्तान में" में अलग शवाहिद के साथ साबित फ़रमाया है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ हॉलैंड के ख़ुद्दाम की virtual मुलाक़ात दिनांक 30 अगस्त 2020 ई. में एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि दुनिया के मौजूदा हालात में हमें farming की तरफ़ अत्याधिकत तवज्जा देनी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस पर फ़रमाया :

उत्तर : प्रश्न यह है कि पहले जब यूरोपियन यूनीयन इकट्ठी हुई है, उन्होंने हर मुल्क में अपना अपना इलाक़ा बांट लिया हुआ है कि तुम फ़रूट उगाओगे, तुम crops उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे। तो जब तक यूरोपियन यूनीयन क़ायम है, उस समय तक तो बड़ी अच्छी बात है ये करते रहें। अब हॉलैंड के ज़िम्मा उन्होंने लगाया हुआ है, उनके हाँ dairy products हैं या fruits हैं। और fruits भी ख़ास किस्म के हैं। pears इत्यादि और something like that यू.के brexit के माध्यम निकल गया है, थोड़ी देर बाद जब ये पूरी तरह निकल जाऐंगे तो उन्हें फल मंगवाने के लिए भी मुश्किल पेश आएगी। और wheat crisis भी आजाएगा। तो उनको मुश्किलात पेश आयेंगी, इसलिए यू.के के लिए तो ज़रूरी है कि agriculture पर focus करें और उसको अत्याधिकत develop करने की कोशिश करें और अपने agriculture में self-sufficient बने, grains में भी और vegetables में भी और fruits में भी। जहां तक यूरोप का प्रश्न है तो यूरोप का जो grains है, इस में तक़रीबन वे self-sufficient ही हैं। बल्कि export भी करते हैं। इसी तरह फल इत्यादि हैं। कुछ सबज़ीयां हैं जो tropical इलाक़ों से ये लाते हैं। वह यहां हो नहीं सकतीं अतिरिक्त इसके कि greenhouses

बना के वे लगा जाएं। इसलिए बेहतर यही है कि अपने मुल्कों की पैदावार के लिहाज़ से वे करें। यदि यूरोप एक रहेगा तो ठीक है। लेकिन कल को कोई और भी मुल्क यूरोपियन यूनीयन से निकलता है तो फिर उस को मुश्किल पड़ेगी जिस तरह इंग्लिस्तान को मुश्किल पड़ रही है। फिर रशिया जब इकट्ठा था तो उस समय उन्होंने बनाया हुआ था कि अमुक state में गंदुम उगेगी, अमुक में कॉटन उगेगी, अमुक में अमुक crop होगी। और जब वे टूट गए तो फिर उनकी states को भी मसायल पैदा हुए। इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि इकट्ठे रहें और यदि कहीं chances पैदा होने का इमकान है तो जो हमारे politicians हैं उनको यह सोचने से पहले कि हमने अलग होना है, अपने लोगों की जो staple food है इस को मुहय्या करने के लिए भी पहले सोचना चाहिए कि किस तरह हम यह मुहय्या करेंगे और इस के लिए प्लैनिंग होनी चाहिए। बग़ैर प्लैनिंग के छोड़ दें तो फिर वह हाल होता है जो अब यू.के का होने वाला है। तो सारे यूरोपियन यूनीयन के मुल्कों को देखना चाहिए, बैठना चाहिए, ग़ौर करना चाहिए कि हमारे सारे यूरोप की, जो हमारी यूरोपियन यूनीयन में छब्बीस सत्ताईस मुल्क शामिल हैं उनकी requirement क्या है और इस requirement के हिसाब से हमारी अलग grains की हर साल की produce क्या है और इस produce को हम ने किस तरह मज़ीद बेहतर करना है। तो इस लिहाज़ से ठीक है आप की बात, कोशिश करनी चाहिए। लेकिन यदि उस के बाद फिर crisis आता है और crisis के बाद जंग होती है तो इस में पता नहीं यदि कहीं किसी ने पागलपन में एटम-बम इस्तिमाल कर दिया तो न वहां agriculture रहनी है और न वहां कुछ और चीज़ रहनी है। तो इसलिए अल्लाह तआला ही रहम करे।

प्रश्न : इस मुलाक़ात में एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि छोटे बच्चों की तर्बीयत के लिए किस तरह और क्या तरीक़ इख़्तियार किया जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : बात यह है कि अल्लाह तआला ने तो कहा है कि जब बच्चा पैदा होता है उसी समय तर्बीयत करो। इसी लिए इस्लाम में यह प्रचलित है यह सुन्नत है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी यह फ़रमाया करते थे और फिर हम अमल भी इसी बात पर करते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके दाएं कान में अज़ान देते हैं और बाएं कान में तकबीर पढ़ते हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला का नाम उस के कान में पड़े और तौहीद पर वह क़ायम हो। तो तर्बीयत जो है वह तो अल्लाह तआला ने कहा है कि पहले दिन से शुरू कर दो। यह न देखो कि बच्चा छोटा है इस को समझ नहीं आएगी। बच्चा छोटा है इस को बताओ, कोई चीज़ तुम देते हो तो तुम कहो कि यह हमें अल्लाह तआला ने दी है, अल्लाह तआला ने तुम्हारा इंतिज़ाम किया। अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाला, अल्लाह तआला ने मुझे सहूलत मुहय्या की। हमने तौहीद को क़ायम करना है इस लिए पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला पर उनका ईमान पैदा करो कि जो चीज़ वे हासिल करते हैं, वह अल्लाह तआला उन के लिए उनका इंतिज़ाम करता है। इस तरह अल्लाह तआला पर आहिस्ता-आहिस्ता यक़ीन बढ़ना शुरू होगा।

फिर बताओ कि जब अल्लाह तआला हमें चीज़ें देता है तो हम ने अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करना है। फिर कहो कि तुम अभी छोटे हो, तुम्हें पता नहीं, तुम अल्लाह मियां से केवल दुआ किया करो कि अल्लाह तआला हमें इसी तरह इनामात देता रहे, हमारे पर फ़ज़ल करता रहे। और हम बड़े हो गए हैं इसलिए हमें कुछ थोड़ा सा पता लग गया है इसलिए हम अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं। जब तुम बड़े होगे तो तुम भी नमाज़ पढ़नी शुरू कर दोगे। फिर जब बच्चा सात साल का होता है यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस को बताओ कि तुमने नमाज़ पढ़नी है या नमाज़ फ़र्ज़ है। और आहिस्ता-आहिस्ता उसको दो या तीन या चार जितनी नमाज़ें बच्चा पढ़ सकता है पढ़ता रहे और जब दस का हो जाये, उस समय matured दिमाग़ हो जाता है, फिर उस को नमाज़ पढ़ने की आदत डाल दो। तो यह शुरू की जो तर्बीयत है, वही है जो बच्चा को आख़िर तक काम देती है। और फिर क़ुरआन-ए-करीम भी बच्चा पढ़ता है। लेकिन इतना भी stress बच्चे पर न डालो कि तीन साल की उम्र में उसे क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाना शुरू कर दो, चार साल की उम्र में वह थक जाए और जब ग्यारह साल की उम्र का हो तो बाहर के माहौल में जाए और आज़ादी उस को हासिल होना शुरू हो जाए कहने का मतलब एक दरमियाना रवैय्या अपनाओ। बच्चे को समझाओ, अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान दिलवाओ, इस्लाम की सच्चाई का सबूत दो। इस ज़माना में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दीन की सच्चाई क़ायम करने के लिए भेजा है इस की बातें बताओ। छोटी छोटी कहानियां सुना कर, सहाबा के छोटे छोटे वाक़ियात सुना कर, नबियों के वाक़ियात सुना कर, अल्लाह तआला के जो लोगों पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानियां सुना के, जो तुम पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानी के interest पैदा करो। तो इस तरह एक मुहब्बत पैदा की जाती है। नेक नीयती से, तवज्जा से माँ बाप बच्चों को समझाते रहें, दीन की तरफ़ लाते रहें तो फिर दीन से वह attach हो जाऐंगे तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजहान भी होगा, फिर नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा भी होगी। लेकिन पंजाबियों की तरह यह कह देना कि बच्चे को छोड़ दो, बड़ा होगा तो आप ही ठीक हो जाएगा। यह काम नहीं चलेगा। अल्लाह तआला ने तो हमें सबक़ दिया कि पहले दिन से तर्बीयत करो। इसलिए "बड़ा हो के ठीक हो जाएगा" वाली बात कोई नहीं है। बच्चों की तर्बीयत उसकी उम्र के लिहाज़ से करो और अपने नमूने दिखाओ।

प्रश्न : हॉलैंड के ख़ुद्दाम की इसी 30 अगस्त 2020 ई. की virtual मुलाक़ात में एक और ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि एक ख़ादिम को कौन से काम कम से कम रोज़ाना करने चाहिएं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : एक ख़ादिम को कम से कम रोज़ाना पाँच नमाज़ें समय पर पढ़ लेनी चाहिऐं। फ़ज्र की नमाज़ फ़ज्र के समय उठ के पढ़ो और यदि नमाज़ सैंटर या मस्जिद क़रीब है तो वहां जाके बाजमाअत पढ़ो। और काम के बाद मग़रिब और इशा की नमाज़ें भी नमाज़ सैंटर में पढ़ें। और काम पर ज़ुहर अस्र की नमाज़ें भी पढ़ें। अपनी पाँच नमाज़ों की पाबंदी कर लें क्योंकि यह बुनियादी आदेश है। यह तो

रोज़ाना का काम है, यह काम कर लें। टक्करें नहीं मारनी। इसलिए नमाज़ पढ़ेंगे कि अल्लाह तआला का आदेश है और मैंने इसलिए नमाज़ पढ़नी है तो फिर जो बाक़ी अख़लाक़ हैं वे भी पैदा हो जाऐंगे। जब आप नमाज़ पढ़ते हुए अल्लाह तआला से اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ की दुआ करेंगे तो यह दुआ जब दिल से निकलेगी तो वह यह होगी कि अल्लाह तआला आप को रुहानी मुआमलों में भी الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ पर चलाए, सही गाईड करता रहे और आप सही रस्ता से उधर deviate न करें। और जो अख़लाक़ीयात अल्लाह तआला ने बताए हुए हैं, जो अल्लाह की शिक्षा है उसके ऊपर भी सही चलते हैं। और जब إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कहेंगे तो ज़ाहिर है कहेंगे कि हे अल्लाह तआला हम तेरी ही इबादत करना चाहते हैं और तुझसे ही सहायता मांगते हैं, हमारी सहायता कर, हमें उन लोगों से बचा ले जिन को तू ने सज़ा दी और जो सही रास्ते से फिर गए। तो इस की रहमानियत मांगें, उसकी रहीमियत मांगें। और फिर जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ रहें होंगे तो केवल दुनिया ही की बातें न मांगें, अगले जहान की भी बातें मांगें। एक ख़ादिम जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ लेगा तो समझ लें कि उसने सब कुछ कर लिया।

प्रश्न: एक महिला ने महिलाओं के बाल कटवाने और उन बालों को कैंसर के किसी ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को donate करने के बारे में हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार किया। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र दिनांक 25 दिसंबर 2019 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया :

उत्तर : ज़रूरत पड़ने पर महिलाओं के बाल कटवाने में कोई हर्ज नहीं। इसलिए हज और उमरा की तकमील पर महिलाएं अपने बाल काट कर ही एहराम खौलती हैं। हदीस में आता है कि सहाबियात ज़रूरत पड़ने पर अपने बाल कटवाया करती थीं। जबकि महिलाओं को हलक़ अर्थात सिर मुंडवाने की आज्ञा नहीं। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मर्दों को महिलाओं की और महिलाओं को मर्दों के तरह समानता इख़्तियार करने से मना फ़रमाया है। अत: महिलाओं को मर्दों के ढंग पर बाल नहीं कटवाने चाहिएं। लेकिन यदि ज़ीनत की ख़ातिर मुनासिब हद तक बाल कटवाए जाएं जिसमें मर्दों से मुशाबहत पैदा न होती हो तो इस में कोई हर्ज नहीं।

किसी मरीज़ को बाल donate करना सवाब का काम है। इस में कोई हर्ज की बात नहीं क्योंकि जब ईलाज के सिलसिले में एक इन्सान दूसरे इन्सान को अपना ख़ून और अन्य अंग बतौर अतीया दे सकता है तो बाल क्यों नहीं दे सकता।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 12 मार्च 2021 ई.) शेष.....

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝٣٠
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को हर दोष से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का दृढ़ सकंल्प करते हैं, क्योंकि वे कदापि व्यर्थ नहीं किए जाएँगे। संभव नहीं कि परमेश्वर उनको अपमानित होने दे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका, वे प्रत्येक आपदा और विपदा के समय सुरक्षित रखे जाएँगे। मूर्ख है वह शत्रु जो उनको अपनी शत्रुता का लक्ष्य बनाए, क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं और ख़ुदा उनका सहायक है। **ख़ुदा पर किसकी आस्था है?** केवल उन्हीं की जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुँहफट, पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा। वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अदभुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है परन्तु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता हैं, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है। वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का **दामन न छोड़े।** हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना। समस्त संसार का **वही ख़ुदा है** जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए **अलौकिक निशान** प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए **मसीह मौऊद** बनाकर भेजा।" (पुस्तक: कश्ती नूह)